धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मार्च - 2011

* महोत्सव मुबारक के शुभ अवसर पर दान
* रूहानी कैंसर नीच घृणा का कहर
* रायचंद की उदारता से अभिभूत हुए बापू
* सत्य प्रचार की नेचर मूलक सत्य विधि क्या?
* मेरे महा सौभाग्य
* चण्डीगढ़ में माता पिता दिवस
* माता पिता सन्तान दिवस
* शुभ संग्राम

महोत्सव मुबारक के शुभ अवसर पर दान

महोत्सव मुबारक के शुभ अवसर पर 500 या इससे अधिक दान देने वालों के नाम नीचे दिए जाते हैं: -

1	श्रीमान बलदेव सिंह के परिवार की ओर से U.S. 2000 डालर जो लगभग	90,000
2	श्रीमान जी की पुत्री डा॰ नम्रता की ओर से	5,000
3	श्रीमती प्रेम बाला जी खोसा (श्रीमान बलदेव सिंह जी के बड़े बहन जी)	11,000
4	गुप्त दान	20,000
5	डा॰ विनोद जी खेड़ा	10,000
6	श्री अशोक सिंगला जी	7100
7	श्री अशोक सिंगला जी भेंट	2320
8	श्रीमान एस. एन. बाली जी	3000
9	श्रीमान खुशपाल सिंह जी बंगा	2100
10	श्रीमती कमलेश जी वशिष्ट	2150
11	श्रीमान बलवन्त राए जी कैनेडा	2100
12	श्रीमती अमरजीत कौर जी बराड़ पुत्र वधु श्रीमान हरनाम सिंह जी मलके	2000
13	श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना	2000
14	श्रीमती विद्यावती जी भेंट फंड	1645
15	एकता खेड़ा	1300
16	श्रीमान सुभाष जी पंचकूला	1000
17	श्रीमान बलदेव सिह जी थराजवाला	1000
18	श्रीमती सतिन्द्र ढिल्लो प्रिंसीपल	1000
19	श्रीमती शशी जी खेड़ा	1000
20	श्रीमान तेजराम जी गुजरात (सिरसा मन्दिर के लिए)	500
21	महोत्सव दान	500
22	श्रीमान मुन्शी राम जी मोगा	500
23	श्रीमती सुरिन्द्र भुल्लर	500
24	श्रीमती वीर पाल जी	500
25	श्रीमान देव सुमन जी	500
26	श्रीमती मोनिका अरोरा	500
27	श्रीमती सरोज जी कुक्कड़	500
28	श्रीमती आशा रानी जी	500
29	श्री विजय चावला जी	500
30	श्रीमान तेज राम जी कल्याण	500

अगर इस सूचि में किसी का नाम रह गया हो, तो उसके लिए क्षमा चाहेंगे। यदि आप सूचित कर सकें तो कृपा होगी।

धर्म जीवन

खण्ड 24 अंक 3

मार्च - 2011

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

रूहानी कैंसर नीच घृणा का कहर

जैसे कोई कौआ हंस की बोली समझ नहीं सकता, उससे भी असंख्या गुणा अधिक हम नीच सुख अनुरागी और अति दुर्बल मनुष्य परम पू० भगवान देवात्मा की बोली को नहीं समझ सकते। हां, देव बाणी को बार बार सुनकर, बार बार पढ़कर, जुबानी कण्ठस्थ करके भी हमारे नीच सुख अनुरागी मनुष्यों के लिए, उसको पूरा 2 समझना और पूरी पूरी गहराई तक अनुभव करना लगभग असम्भव है। हम मनुष्य बहुत जल्दी ही अपनी समझ को ठीक समझने की रुचि रखते हैं।

नीच घृणा के भयानक प्रकृत रूप को देखने के सम्बन्ध में मैं इस बात से 100 % सहमत हूं। और नीच सुख अनुराग, आलस्य, स्वाद, काम अनुराग, धन अनुराग आदि हमें कुछ अंश अपनी अक्ल से समझ आ सकते हैं। परन्तु घमंड और घृणा का जितना हम पर अधिकार होता है, उतना ही हम इनसे अपने आपको मुक्त देखने वा समझने की रुचि रखते हैं। मुझ अदना वजूद को भी समाज में आने के 30 - 35 वर्ष बाद पता लगा कि मेरे भीतर, घमंड, नीच घृणा का महा भयानक, अति विस्फोटक प्रबल मसाला वर्तमान है। घमंड घृणा के बारे प्रति दिन सुनता था पढ़ता था, परन्तु अपने घमंड के विषय में पूर्ण बेख़बर था। जगह जगह टकराने से नर्क पैदा करता था, परन्तु कुछ दिखाई नहीं देता था। परन्तु मेरे महा सौभाग्य के गुरु महाराज वा सहायकारियों की सहायता से, उनकी आपार कृपा से किसी अंश इसका कुछ पता लग गया, अपनी तुच्छ योग्यता अनुसार उससे बचने का फिकर वा संग्राम शुरू हो गया।

मैं इस भ्रान्ति का शिकार हो गया कि नीच घृणा की भयानकता की मुझे समझ है, परन्तु भगवान देवात्मा की कृपा द्वारा उनकी किसी अंश रोशनी के मिलने पर मैं चौंक गया, कि मैं 20 - 25 वर्ष से नीच घृणा को जितना भयानक देखता था वह तो कुछ भी नहीं था मुझे उसका महा विनाशकारी रूप गुरू महाराज की रोशनी में दिखाई देने लगा। इससे मुझे किसी सीमा तक एहसास हो गया कि हमारी मूल वा अन्ध प्रकृति के कारण देव बाणी में भरी रोशनी तक शायद कभी भी पूरी पूरी पहुंच नहीं हो सकती, उसकी पूरी गहराई को हम नहीं आंक सकते।

मैं जो अब तक समझा था कि नीच घृणा घमंड सुख से जुड़ी हुई है और सुखों की तरह घमंड पर जब चोट लगती हे, तो नीच घृणा अवश्य पैदा होती है, इसके पैदा होने से मनुष्य चोट मारने वाले से: -
1) फट जाता है, 2) दूर हो जाता है, 3) उससे परे परे

रहता है, 4) उसका मुंह तक देखना नहीं चाहता, 5) उससे कोई बातचीत करना नहीं चाहता, 6) उसमें दोष ही दोष देखता है, 7) उसकी निन्दा करता है, 8) झूठे कलंक लगाता वा फैलाता है, 9) उसकी कोई सहायता वा सेवा करना नहीं चाहता, 10) घृणा द्वारा उसकी बड़ी हानि करना चाहता है या किसी और से करवा कर तृप्ति पाता है आदि।

घृणाकारी का अन्मेल में रहना अवश्यम्भावी है। यह बेहद हानिकारक रोग है। यह ज़हर के तुल्य है, यह एक आग है जो उच्च योग्यता वा उच्च भावों को जलाने का काम करती है आदि आदि। इन बातों को पू० भगवान की देव बाणी पढ़कर, नीच घृणा को किसी अंश समझकर तृप्ति पाता था और अपने सौभाग्य अनुभव करता रहता था।

धीरे धीरे पू० भगवान की ज्योति की किसी अंश और किरणें मिलने पर मुझे नीच घृणा का अति भयानक और महा हानिकारक रूप किसी अंश समझ आने लगा और यह अनुभव मैं अपने और अधिकारी साथियों के साथ बांटना चाह रहा हूं।

नीच घृणा महा विनाशकारी वा घातक है। इसकी महा घातकता बहुत विशाल है और दूर गामी है। यह मनुष्य के जीवन में कुछ नहीं छोड़ती। इससे बड़ा मनुष्य के लिए कोई श्राप नहीं। इसकी मार केवल हमारे सुख पर चोट लगाने वाले तक ही सीमित नहीं रहती, यह तो मनुष्य के सारे अस्तित्व को ही जला कर राख कर देती है। इसकी भयानकता का कुछ अंश ही सामने आने से कंपकंपी छूटती हुई महसूस होती है।

वास्तव में कुछ देव बाणियां उक्त भयानकता की ओर संकेत भी करती हैं। वह देव बाणियां पढ़ी हुई तो थीं, परन्तु मेरी अपनी अन्धता वा कठोरता, उसमें जो ज्योति विराजमान थी, वहां तक पहुंचने नहीं देती थी। वह वाणी यह है: -

"अंह अनुरागी (घंमडी, नीच घृणाकारी, स्वार्थी, स्वेच्छाचारी, ईर्षा परायण, द्वेष परायण) के लिए नेचर ने भलाई के सब मार्ग बंद कर रखे हैं।"

"नीच घृणा का भाव महा हानिकारक रोग है, जिन जनों के भीतर यह महा नीच भाव प्रबल रूप में वर्तमान होता है, उनका कुछ भी नहीं बनता।"

"अंह अनुरागी के लिए इस दुनियां वा अगली दुनियां में पतन ही पतन है" आदि आदि।

जब मैंने निम्नलिखित देव बाणी का अपने साधन में पाठ किया: -

"बेशक वह आत्मिक उच्च परिवर्तन सम्बन्धी कुछ योग्यता रखने और भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को लाभ करने का कुछ अवसर पाकर अपने अधर्म वा पतनकारी जीवन से एक या दूसरी सीमा तक अवश्य मोक्ष पा सकता है।

इससे मेरे ऊपर यह सचाई चमकी कि हम गुरू महाराज के प्रभाव पाकर किसी सीमा तक उच्च परिवर्तन पाकर, सेवक, कर्मचारी या पदधारी बन सकते हैं, परन्तु इससे यदि नीच घृणा अन्दर भरी रहती है, तो हमारी ख़ैर नहीं, बेशक हम इस उच्च परिवर्तन को पाकर खुशफहिमी में रह सकते हैं कि अब तो हम भले बन गए हैं। प्रचारक बन गए हैं, उच्च बन गए हैं, अत: हम सुरक्षित हैं ही आदि। नेचर के नियम अटल हैं, यदि हम नीच घृणा रखते हैं और उसके काफी हद तक बोधी नहीं बनें, उससे ऊपर नहीं उठ पाए, तो नीच घृणा की महा मार से हम किसी प्रकार भी बच नहीं सकते।

नीच घृणा का अपने ऊपर प्रबल और ज़ोरदार अधिकार रखकर हम और किस प्रकार नाश को प्राप्त होते हैं।

1) हम ज़ोरदार नीच घृणा का अधिकार रखकर, चाहे हम गुरू के दरबार के अन्दर अपने आपको कुछ का कुछ बनाए फिरते हों, आत्मिक हित के सम्बन्ध में अन्धे और अबोधी रहने के लिए मजबूर रहते हैं। नीच घृणा के ज़ोरदार प्रेमी होकर अपने सच्चे हित और अहित की होश से हमारा वचिंत रहना अवश्यक है।

2) अपने आत्मा को अपनी किसी अहित लाने वाली गति से बचाने, और उसके अन्दर किसी उच्च भाव को विकसित करने की किसी इच्छा तक से भी वचिंत रहते हैं। नीच घृणा को रखकर हम सच्ची हित अभिलाषा से ही खाली रहते हैं। वह नीच घृणा हमारे भीतर यह अभिलाषा पैदा ही नहीं होने देगी। मान्सिक रूप से हम चाहे उच्च बनने के लिए कितने ही अपने आपको संग्राम शील समझते हों, हमारे सब संग्राम थोथे और अर्थ हीन ही रहेंगे।

3) नीच घृणा की प्रबलता रखकर हम अपने निज के साधनों द्वारा परम पू० भगवान देवात्मा के अद्वितीय देव प्रभावों को लाभ करने की कोई योग्यता प्राप्त नहीं कर सकते। हमारे निज के साधन सदा निरर्थक, अर्थहीन और एक अभ्यास ही रहेंगे।

4) देवआत्मा के अद्वितीय देव प्रभावों से रहित रहकर हमारे भीतर अपनी किसी भी नीच शक्ति से मुक्त होना तो बहुत दूर की बात, मुक्त होने की सच्ची इच्छा भी पैदा नहीं हो सकती।

5) परम पू० भगवान देवात्मा के प्रभावों तक कोई रसाई प्राप्त करने के अयोग्य रहकर हम कोई सच्चा प्रचार नहीं कर सकते। इस सम्बन्ध में गुरू महाराज ने एक कर्मचारी को इस प्रकार फरमाया था: –

"तुम बेशक यह ख़्वाहिश रख सकते हो कि मैं प्रचार के विभाग में काम आऊं, या उसमें सेवाकारी बनूं, परन्तु जब तक नीच घृणा के भाव से आपका निस्तारा नहीं होगा, तब तक आपकी यह ख्वाहिश पूरी नहीं हो सकती, अर्थात तुम ऐसा काम (प्रचार) नहीं कर सकते।

6) हम कोई विशुद्ध सेवा या परहित का भाव नहीं रख सकते।

हम "अपने आत्मा में किसी जीवित वा अजीवित अस्तित्व के साथ शुद्ध सात्विक भाव से कोई सम्बन्ध, या किसी की सेवा या भलाई के लिए कोई स्थाई उच्च भाव नहीं रख सकते।"

7) हम नीच घृणा का ज़ोरदार अधिकार रखकर "अपने नीच सुखों की ही तृप्ति चाहने के भिन्न- - - - और अपनी नीच घृणाओं और अपने नीच अनुरागों के द्वारा प्रेरित होकर मिथ्या और अहित मूलक भिन्न भिन्न प्रकार की पतनकारी गतियां करके खुश रहते हैं, और अपने सुख और आनन्द को ही अपने जीवन का लक्ष्य रखते हैं और और उसके लिए जीते हैं।

8) नीच घृणाकारी होकर हम धर्म जीवन के राज्य में प्रवेश नहीं करते और नहीं कर सकते।

9) नीच घृणाकारी होकर और रहकर हम परम पू० भगवान देवात्मा के अद्वितीय देव रूप की कोई सच्ची पूजा और उपासना नहीं कर सकते और न ही उनके प्रकृत देवरूप के कभी सच्चे दर्शन ही कर सकते हैं। केवल मान्सिक रूप से देव रूप की महिमा देख सकते हैं और ब्यान कर सकते हैं।

10) परम पू० भगवान देवात्मा के प्रकृत अद्वितीय देव रूप के दर्शन के अयोग्य रहकर और उसके द्वारा देव प्रभावों के सच्चे अमृत की प्राप्ति से खाली रहकर, न हम अपने लिए सम्भव सत्य मोक्ष ओर विकास की प्राप्ति का ही कोई मार्ग खोल सकते हैं।

उफ! नीच घृणा की शक्ति कितनी महा भयानक और घातक!!

नीच घृणा का ज़ोरदार अधिकार रखकर भी मनुष्य किसी अंश देव प्रभावों को पाने की योग्यता रखकर मोटे पापों और मिथ्याओं से बच सकता है। देवात्मा को अक्ल से समझ सकता है, देवात्मा के विषय में अपनी अक्ल से बहुत कुछ बता भी सकता है, परन्तु वह अंह अनुराग, नीच घृणा से मुक्त हुए बिना रुहानी आक्सीजन देवात्मा के देव रूप के साक्षात दर्शन नहीं कर सकता, देव रूप के साथ स्थाई सम्बन्ध स्थापन करने में ठोस सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। देवरूप के साथ सम्बन्ध के बिना कोई अपना प्रकृत नीच, तुच्छ, मलीन महा दुर्बल रूप तक नहीं देख सकता। वह भगवान की महा दुर्लभ शरण प्राप्त करके भी इस दुनियां से बहुत कुछ खाली हाथ ही जाने के लिए बेबस रहता है।

इसलिए नीच घृणा की भयानकता बेहद गहरी है, इस मूज़ी रोग से अधिक से अधिक भय खाने की और सच्चे अर्थों में अधिक से अधिक दुखी रहने की अवश्यकता है।

महाराज फरमाते हैं "इस चीज़ के आने की अवश्यकता है, कि जो तुम्हारा बुरा चाहे और बुरा करे तुम उसका भी भला चाहो और जब मौका मिले, उसका भी भला करो"।

जितनी यह बात हमारे जीवन में आएगी, उतने ही हम देवात्मा के हो सकते हैं, नहीं तो हम अपने अंह के ही रहते हैं।

(बलदेव सिंह)

रायचंद की उदारता से अभिभूत हुए बापू

महात्मा गांधी ने अपने संस्मरण में लिखा है-मैंने गुरू नहीं बनाया, किंतु मुझे कोई गुरु मिले तो वे हैं रायचंद भाई। रायचंद भाई पहले बंबई में जवाहरात का व्यापार करते थे। उन्होंने एक व्यापारी से सौदा किया।

यह निश्चित हो गया कि अमुक तिथि तक, अमुक भाव में इतना जवाहरात वह व्यापारी देगा। व्यापारी ने रायचंद भाई के साथ लिखा-पढ़ी कर ली। यह संयोग की बात थी कि जवाहरात के मूल्य बढ़ने लगे और इतने अधिक बढ़ गए कि यदि रायचंद भाई को उनके जवाहरात वह व्यापारी दे तो उसे इतना घाटा होता कि उसका स्वयं का घर भी नीलाम हो जाता। जब रायचंदभाई को जवाहरात के वर्तमान बाजार भाव का पता लगा तो वे उस व्यापारी की दुकान पर पहुंचे। उन्हें देखते ही व्यापारी बोला-मैं आपके सौदे के लिए स्वयं चिंतित हूं। रायचंद ने कहा-तुम्हें जब चिंता लग गई है तो मुझे भी चिंता होनी चाहिए। दोनों की चिंता का कारण यह लिखा-पढ़ी है। इसे समाप्त कर दें तो दोनों की चिंता खत्म हो जाएगी।

रायचंद ने लिखा-पढ़ी के कागज को फाड़ते हुए कहा-इस लिखा-पढ़ी से तुम बंध गए थे। बाजार भाव बढ़ने से मेरा चालीस-पचास हजार रुपया तुम पर लेना हो गया, किंतु मैं तुम्हारी परिस्थिति जानता हूं। रायचंद दूध पी सकता है, खून नहीं पी सकता। व्यापारी यह कहते हुए कि आप मनुष्य नहीं, देवता हैं रायचंद के चरणों में झुक गया।

"किसी भी तरह दूसरे की परिस्थिति से लाभ उठाने को आतुर आज के स्वार्थी समाज को ऐसे महापुरूषों से प्रेरणा लेनी चाहिए।"

सत्य प्रचार की नेचर मूलक सत्य विधि क्या?

नेचर में जो एक बहुत बड़ी सच्चाई पाई जाती है, और जिसकी तरफ लाखों और करोड़ों आत्माओं का ध्यान नहीं जाता, वह है नेचर की अपनी प्रचार की विधि। नेचर ने मनुष्यों को यह नहीं बताया कि तुम फूलों को प्यार करो, क्योंकि फूल सुन्दर और खुशबूदार हैं। नेचर ने केवल इतना किया, कि अपने कारखाने में फूलों को सौन्दर्य और खुशुबू प्रदान की। फूलों ने इसलिए अपने जीवन से प्रचार किया न कि ज़बान से। सेवाकारी पशुओं ने अपने जीवन से प्रचार किया न कि ज़बान से। कई कुत्तों ने, घोड़ों ने और हाथियों ने अपनी वफादारी का अपने जीवन से प्रचार किया न कि ज़बान से। मनुष्य ही ऐसा मूर्ख है, जो यह विश्वास रखता है, कि मैं जीवन को छोड़कर ज़बान से ही प्रचार कर सकता हूँ। रूस ने शुरु में मज़हब से तंग आकर मज़हब का मानना ही पाप करार दिया था। और अब मन्दिरों वा गिरजाओं आदि को खाली कराकर रूस निवासियों को इतनी आज्ञा मिली है कि वह किसी गिरजे में जाकर अपनी पूजा कर सकते हैं। फिर भी सोवियत की जमायत जो रूस में राज करती है, वह न मज़हब को मानती है और न खुदा को मानती है। अब अगर रूस के हाकिमों के नुक्ता निगाह में कुछ परिवर्तन आया है, तो वह यह है कि रूसियों को पूजा का अधिकार दिया जावे। परन्तु सरकार का इसके साथ कोई वास्ता नहीं। और मज़हबों के लिए यह जरूरी रखा है, कि वह सियासी (राज नैतिक) मामलों में कोई दख़ल न देंगे। सियासत और मजहब को बिलकुल अलग अलग कर दिया है। इसलिए मजहब शख़्सी हो गया है कौमी नहीं रहा। भारत वर्ष में मज़हब को सियासत का जामा पहनाया हुआ है, और उसको शख़्सी नहीं बनाया, कौमी बनाया गया है। इसलिए भारत वर्ष में जहंन्नुम खड़ा हुआ है। मुसलमान अपने देश को लेकर कौम नहीं बनते हैं, किन्तु मज़हब को लेकर समझते हैं। अर्थात् धर्म विश्वास का नाम है जीवन का नहीं। इस मूर्खता से भरी हुई मिथ्या शिक्षा ने भारत भूमि को बरबाद किया हुआ है।

यह महा रोग कि धर्म विश्वास का नाम है, ओर जीवन का नाम नहीं, नेचर के नियमों के विरूद्ध है। इसलिए जो इस मिथ्या को मानेंगे, वह दुनियां में अपनी और औरों की तबाही का हेतु होंगे। इस प्रकार फूलों की खूबी खुशबू और सौन्दर्य में है, वृक्षों की विशेषता साया और फल देना है, गाय, भैंस, बकरी, भेड़, ऊंट और घोड़े की विशेषता सेवाकारी होने में हैं, पहाड़ों की यह विशेषता है, कि वह स्थिरता दें, ठीक इसी प्रकार धर्मवान जन की यह विशेषता है कि वह कम से कम हानिकारक और अधिक से अधिक सेवाकरी हो। कोई जन यह दावा कर सकता है, कि मैं धर्मवान हूं, वह जिस पैमाने से नापा जाएगा, वह यही है, कि क्या वह कम से कम हानिकारक और अधिक से अधिक सेवाकारी है? क्या वह धर्म के लिबास में ऐश परस्त तो नहीं? यहां प्रश्न उत्पन्न हो सकता है, कि ऐश परस्त कौन जन है? नीच अनुरागी ऐश परस्त हो जाते हैं, क्योंकि उनके जीवन का मूल मन्त्र यही होता है, कि मुझे सुख मिले, चाहे इस सुख के लाभ करने में मुझे औरों की हस्ती और अधिकारों को पायमाल करना पड़े। जो जन धन के लिए जीता है, वह दुनिया परस्त है, चाहे घण्टों पूजा और भक्ति करता हो। मैंने मुम्बई मे कई ऐसे जन देखे हैं, जो

12 बजे दोपहर तक अपने साधन व भक्ति में लगे रहते थे, लेकिन थे पक्के दुनिया परस्त। वह साधन और भक्ति इसलिए नहीं करते, कि उनको आत्मा का रूप नज़र आये व आत्मा के रोग नज़र आयें और उनको आत्मिक रोगों से निकलने व सत्य मोक्ष पाने का अवसर मिले, वह तो संस्कारों को लेकर साधना करते हैं और फिर साधन करने का उनके भीतर अभ्यास हो जाता है। वह जन धर्मवान नहीं, कि जो धर्म का कार्य करने के लिए बड़ी बड़ी तनख़्वाहें लेते हैं, इस प्रकार के सन्यासी व मौलवी बहुत पैदा होते जोते हैं। कई बार उनको भाड़े का टट्टू कहा जाता है। इसी प्रकार के पद के आकांक्षी जन दुनियां परस्त होते है। चाहे उनके द्वारा कोई परोपकार का काम भी होता हैं। मेरे सामने ऐसे दो जन हैं, जिन्होंने लाख-लाख रुपया देकर एक संस्थान खोल दी। पहले तो दोनों में इस बात पर लड़ाई होती रही, कि अव्वल नाम किस का लिखा जावे कि इस संस्था का नाम राम श्याम रखा जाये वा श्याम राम संस्था रखा जाए, आखिरकार जिस जन ने चन्द हजार अधिक दिए थे, उसका नाम प्रथम रखा गया। फिर इस बात पर बहुत रौला होता रहा, कि सभापति कौन हो? सभापति के पद के लिए इस कदर साजिशें की गई, कि जिसको देखकर लोग हैरान थे, कि यह अभागे पुण्य का काम करने के लिए आए हैं या अपनी बड़ाई का सौदा करने के लिए। दुनियां तो उनको फिटकार दे रही थी। लेकिन यह अभागे बार बार यह कहते थे, कि हम तो उपकार के भाव से वह संग्राम कर रहे हैं। राम कहता था कि अगर मैं सभापति हो जाऊं, तो इस काम को कहीं का कहीं पहुंचा दूं। मुझे कुर्सी की परवाह नहीं, मैं पद नहीं चाहता, परन्तु क्या करूं, मैं यह दयानतदारी से बोध करता हूं कि श्याम काम को बरबाद कर देगा। मैं काम की शान बढ़ा दूंगा। मैं इसको ऊंचा ले जाऊंगा। श्याम यह कहता था कि अगर सभापति मैं बन जाऊंगा, तब तो संस्था बच जाएगी, अगर राम बन गया, तो संस्था डूब जाएगी। अब यह दोनों ही दर असल तो पदवी के भूखे थे, जैसे कुत्ता हड्डी का भूखा होता है, परन्तु अपने आपको धर्मवान प्रकट करते थे, जैसा कि होना था उस संस्था का बहुत नुकसान हुआ, आखिरकार नतीजा यह हुआ, कि डिपटी कमिश्नर उसका सभापति हो गया।

रूस में जब यह इजाजत मिल गई, कि लोग अपने गिरजों में जाकर पूजा भक्ति कर सकते हैं, तब एक ईसाई मत रखने वाले बजुर्ग ने अपने आदमियों को मुबारकबाद देते हुए कहा कि हमें धन्यवाद के भावों से भरना चाहिए, कि हमारा धर्म व मजहब जार के अधिकार से निकल आया है। जार के जमाने में पादरी लोग सरकार का मुंह देखते थे। और सरकार को खुश करने के लिए अपने बड़े बड़े असूल छोड़ देते थे। इसलिए धर्म तो खत्म हो चुका था, दुनिया परस्ती आ चुकी थी। अब हम न पादरियों के हवाले हैं, और न सरकार के हवाले हैं। अब तो हम स्वतन्त्र होकर अपने जीवन को बेहतर करने में लग जाएंगे। और अपने जीवन से औरों को कायल करेंगे। कोई भी मजहब पादरियों ने नहीं चलाया, ग्रहस्थियों ने चलाया है। ऐसे ग्रहस्थी जनों ने जिन्होंने, अपने जीवन से उच्च दृष्टान्त प्रदर्शन किया है।

क्या यह सच नहीं, कि सरदार साहिब श्रीमान् जमीयत सिंह जी ने अपने नेक जीवन के दृष्टान्त से बड़ी बड़ी हस्तियों को कायल करके

भगवान् देवात्मा के साथ जोड़ दिया। सरदार साहिब श्रीमान् सावन सिंह जी ने अपनी निहायत ही उच्च कोटि की दयानतादारी से कई हृदयों को जीत लिया। श्रीमान् धर्मबल जी को जीवन में भगवान देवात्मा के निकट करने में उनका ही हाथ था।

श्रीमान राम लाल जी कर्मचारी के जीवन में उनका हाथ था। श्रीमान् रामजी दास जी कर्मचारी के जीवन में शुरू में भगवान् की शरण में लाने में उनका हाथ था। इत्यादि इत्यादि।

मनुष्य होकर और जबान रखकर व्याख्यानों के द्वारा हम औरों तक पहुंच सकते हैं, परन्तु व्याख्यान के द्वारा हम तब ही किसी को कायल कर सकते हैं, जब हमारा जीवन ऊंचा हो। बाकी अगर जीवन ऊंचा हो, तो व्याख्यान की इतनी जरूरत नहीं। ईसाई मजहब के फैलाने वालों में से कई विशेष आत्मा हो गुजरे हैं, उन विशेष आत्माओं में से एक गूंगा और बहरा जन था। कहा जाता है कि जब वह गूंगा जन प्लेटफार्म पर जाकर हाथ जोड़कर प्रार्थना की हालत में चला जाता था, अपने श्रद्धा भाव से प्रभावित होकर जब फूट पड़ता था तब सैकड़ों जनों को रूला देता था। उस गूंगे की चुपचाप अपील जितनी प्रभावित करती थी, उतना व्याख्यान देने वालों के व्याख्यान नहीं करते थे।

एक पादारी का वर्णन आता है कि उनकी पत्नी बहुत बुरे स्वभाव की थी। उन्होंने कई उपाय किए परन्तु वह ठीक न होती थी। एक बार वह तंग आकर अपनी पत्नी को अपने बाजुओं के जोर से उठाकर अपने घर के निकट गिरजा में ले गया, वहां उसको बिठाकर प्रार्थना करने लगा, और दुख से प्रेरित होकर धाएं मार कर रोने लगा, लेखक लिखता है कि उस दिन उसकी पत्नी पर इस कदर गहरा असर हुआ कि उसने पति के चरणों में सिर रखकर माफी मांगी। और उस दिन के बाद पति के लिए असाधारण रूप से साथी बन गई। इस पत्नी के दिल पर पति के हित भाव और दुख भाव ने असर किया, न कि शब्दों ने। मैंने एक देव समाज के कर्मचारी को देखा, उनका लड़का बुरी संगत में पड़ कर चोर बन गया। उन्होंने अपने लड़के को झाड़ा नहीं, एक दिन उसको अपने साथ लेकर साधन मन्दिर में गए और उसको बिठाकर जब उन्होंने दुख भरी आवाज में अपनी प्रार्थना शुरू की और हित स्वरूप भगवान् देवात्मा से यह दान मांगा, कि हे भगवन! इस मेरे प्यारे परन्तु गुमराह बच्चे के हृदय को बदलें। तब एक आश्चर्य जनक दृश्य पैदा हो गया। बच्चा जोर जोर से रोया और उनके चरणों के साथ लिपट गया। और उसका जीवन बदलने लगा।

एक खुदा परस्त एक स्थान में देव समाज को बहुत सताता था। हम लोग उसके हाथों से तंग आए हुए थे, इतफाक ऐसा हुआ कि वह बीमार हो गया, और बहुत नाजुक हालत में पहुंच गया। आधी रात को एक देव समाजी डाक्टर उनके रिश्तेदारों की दरखास्त पर उसको देखने के लिए गया। और वहां जाकर घण्टों तक मौत के साथ जंग की। उसको बचा लिया। हमारा दुश्मन और कट्टर दुश्मन डाक्टर साहिब की हमदर्दी और सेवा से इस कदर कायल हो गया, कि दुश्मनी उसने क्या करनी थी हमारा मद्दगार हो गया। जीवन से हृदय जीते जाते हैं न कि शब्दों से।

मैं जब सन् 1926 ई. में दोबारा फिरोजपुर कालिज का प्रिन्सीपल बन गया, तब मैंने यह देखा कि एक हैड मास्टर हमारा कट्टर दुश्मन बना हुआ

है। वह बहुत बड़े स्कूल का हैडमास्टर था। इसलिए मेरे कालिज में अपने लड़को को भेजना तो कहीं रहा, इस कालेज को ही घृणा करता था। मैं यह जानता था कि गन्दगी से गन्दगी साफ नहीं होती। घृणा करने से घृणा दूर नहीं होती। इसलिए अगर इस हैड मास्टर का दिल जीतना है, तो उसके साथ अच्छा बर्ताव करो। मैंने कई उपाय धारण किए, परन्तु मेरी पेश न गई। आखिरकार मुझे पता लगा, कि उसकी लड़की जो लाहौर कालिज में पढ़ती थी, वह बिमार होकर फिरोजपुर आ गई है। उसने इकोनोमिक्स ली हुई थी, जिसको बदलना चाहती थी। उस का बाप मेरे पास परामर्श लेने के लिए आया, मैंने इसको सुनहरी मौका समझा। मैंने सेवा के लिए अपने आपको पेश कर दिया। उसने मेरी सेवा लेना स्वीकार कर लिया, फिर तो क्या था, मैंने पूरी हमदर्दी के साथ इस लड़की को फिलासफी का मजमून पढ़ाया और अन्य कई प्रकार से मद्द की। लड़की पास हो गई और वह भद्र जन हमेशा के लिए मेरा साथी बन गया। और आज तक भी जिस श्रद्धा के साथ मुझे मिलता है, वह उनके जीवन की खूबी है।

धन अनुरागी होकर अगर धन अनुराग के विरूद्ध कोई जन व्याख्यान दे, तो क्या उसके व्याख्यान में असर होगा? वह भगवान् देवात्मा की देव वाणी धन अनुराग के विरूद्ध पाठ करके सुना सकता है। और इस देव वाणी के पाठ का असर जरूर हो जाएगा परन्तु धन अनुरागी के जीवन में इस का कोई असर न होगा, खुद नीच घृणा रखकर अगर कोई जन नीच घृणा के विरूद्ध व्याख्यान दे, और नीच घृणा के विरूद्ध पूजनीय देव शास्त्र मे से पाठ करे तो भगवान् देवात्मा की देव वाणी का असर तो कर देगा, परन्तु अपने जीवन का असर कोई नहीं छोड़ेगा। अपनी बेटियों की शादी अगर कोई जन मोटरकार रखने वाले जनों के घर करे, और वेदी पर बैठ कर यह व्याख्यान दे, कि वह जन बहुत गलत कदम उठाते हैं, जो अपनी बेटियों की शादी धर्मवानों की तुलना में मोटरकार वालों के साथ कर देते हैं, तो क्या उसके व्याख्यान का असर होगा? क्या यह सच नहीं, कि एक सेवका ने ऐसे ही एक प्रचारक के व्याख्यान की निसबत अपनी कापी में यह लिखा था, कि हमारे दिलों पर तो इस प्रचार के व्याख्यान ने बुरा असर डाला। खुद तो बेटियों को साहूकारों के घरों में विवाह दिया, और हमें शिक्षा देते हैं, कि तुम अपनी बेटियां की शादी धर्मवानों के साथ कर दो।

जब नेचर बार बार कहती हैं कि वृक्ष अपने फल से पहचाना जाता है, तब क्या मनुष्य के जीवन में भी यह सच्चाई प्रमाणित नहीं होगी? अवश्य होगी और प्रमाणित हो रही है। जैसे हमारे भाव वैसी हमारी क्रियाएं। हम खुद धोखा खा सकते हैं, और कई औरो को भी धोखा दे सकते हैं। परन्तु नेचर की हकीकत को मिटा नहीं सकते।

हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए, कि नेचर की गठन में झूठ और कपटता हजम नहीं हो सकते। और झूठ और कपटता का भांडा चौराहे में अवश्य फूट जाएगा। क्योंकि काठ की हांडी कब तक आग पर चढ़ेगी। आखिरकार जल भुनकर खाक हो जाएगी।

(श्री. पी. वी. कनल)

मेरे महा सौभाग्य

जब मैं अपनी सारी जीवन यात्रा पर ध्यान ले जाती हूं, तो अपने सौभाग्य वा बरकतों की कोई सीमा नहीं देखती। मेरी आयु मुश्किल से 6 - 7 वर्ष की होगी जब गुरू महाराज के उच्च जीवन धारी वा गुरू के कारज के प्रति समर्पित कर्मचारियों ने हमारे घर में अपने पवित्र चरण पाए। उस समय मुझे कुछ बोध नहीं था, परन्तु मेरे और मेरे परिवार के सौभाग्य के दरवाजे खुलने का शुभ अवसर आ गया था। मैंने अपनी होश में पिता जी का शराबी, कबाबी रूप नहीं देखा, क्योंकि मुझे समझ आने से पहले उपरोक्त फरिश्ता कर्मचारियों ने पिता जी के जीवन की चाल ही बदल दी थी। मेरे महासौभाग्य कि मुझे ऐसे माता पिता के घर जन्म लेने का सौभाग्य मिला, जिनमें देवात्मा सत्गुरू की शिक्षा को समझने की योग्यता थी। धीरे धीरे हमारे घर का वातावरण बदलने लगा। बड़ी बड़ी प्रचार पार्टियां वहां पर आई। गांव में जहां पिता जी अपनी डाक्टरी की प्रैक्टस करते थे, उस गांव के कितने नौजवान बदल गए, परन्तु पिता जी को यह अनुभव होने लगा कि इस गांव में शराब, कबाब में साथी रहे दोस्त हैं, यह मुझे कभी भी गिराने का कारण बन सकते हैं, उन्होंने वह अपनी जमी हुई प्रैक्टस छोड़कर दूसरे गांव में काम शुरू कर दिया। उनकी जवानी की उमर में शराफ़त, मरीजों के प्रति हमदर्दी वा मेहनत ने उनको उस गांव में भी बहुत सम्मान दिया। मेरी उमर पढ़ने की थी, मुझे मोगा देव समाज स्कूल के होस्टल में छोड़ दिया। वहां से मेरी उन्नति का मार्ग खुल गया, वहां पर न केवल मैंने विद्या प्राप्त की, बल्कि वहां की नीति शिक्षा ने आरम्भ से ही मुझे नेक बनने की राह पर डाल दिया, फिर छोटी उमर में मुझे विकासालय में रहने, वहां पर शिक्षा पाने और साथ साथ अपनी पढ़ाई जारी रखने का सौभाग्य मिला, जिसने मुझे पढ़ाई के भिन्न अपने आपको समझने, नीच वा उच्च भावों के अन्तर को समझने, मिथ्या वा सत्य विश्वासों को समझने का शुभ अवसर दिया।

मेरी माता बिल्कुल अनपढ़ थी, परन्तु उनकी मान्सिक शक्तियां गज़ब की थी। एक गांव में रहने वाली स्त्री मोगा में आकर किस प्रकार गुरु महाराज की शिक्षा को समझने के योग्य हुई, जहां तक कि विकासालय की परीक्षएं पास की, मिथ्या विश्वासों से ऊपर उठ गई। प्रचार पार्टियों के साथ जाकर लोगों के पाप छुड़वाने में भाग लेने लगी। गजब की योग्यता रखने वाली मां की सन्तान होना, मेरा कितना बड़ा सौभाग्य! पिता जी ने अपना काम छोड़कर गुरू महाराज के मिशन में जीवन भेंट कर दिया, मेरी मां ने उनका कभी विरोध नहीं किया, बल्कि कन्धे से कन्धा मिलाकर सदा उनका साथ दिया। बहुत कठिनाईयां आई, परन्तु मैंने उन्हें कभी इस बात से पछताते नहीं देखा कि हम समाज में क्यों आए। उनका लिखवाया हुआ वह लेख स्मरणिय है "शरण तुमरी आती मैं, तो क्या होती, कहां होती" यह बात शत प्रति शत सत्य है कि "अनपढ़ तुच्छ शक्तियों वाले, भी जो यहां आ जाते हैं, चन्द साल में उनके मुकाबल, विद्वान शर्माते हैं।"

मेरा सौभाग्य कि मेरे पिता के भीतर जो गुरू के लिए अटूट श्रद्धा थी, उसने गुरू के जन्म स्थान पर, सोलन में उनके निवास स्थान पर, गुरू महाराज की संस्थाओं में वह बेमिसाल काम कर दिया कि उनको गुरू मिशन के अनथक सिपाही कहते थे। मोटे पापों के प्रति घृणा वह दूसरों में संचार करने की योग्यता रखते थे। समाज से जोड़ने की बहुत गहरी तड़प थी उनके भीतर। उनको समाज के चन्द जनों की ओर से बहुत अन्याय पूर्ण व्यवहार मिले, परन्तु गुरू के प्रति उनकी

आस्था में कभी कमी नहीं आई।

ऐसे माता पिता के घर में जन्म लेना, परवरिश पाना मेरा कितना बड़ा सौभाग्य।

उनके कारण जो शारीरिक, मान्सिक और हार्दिक योग्यताएं मिली, यह उससे भी बड़ा सौभाग्य है। इसी के कारण मैं पू० भगवान की शिक्षा को समझने के योग्य हुई। अपनी संस्था में काम करने में अनथक मेहनत वा शानदार परिणाम देने में सफल हुई। सम्मान भी मिला और ईनाम भी मिले। अच्छे माता पिता से अच्छे जीनज़ का मिलना किसी भी बच्चे का बहुत बड़ा सौभाग्य है। मेरा सौभाग्य और भी बढ़ जाता है कि मेरे माता और पिता दोनों के अच्छे जीनज़ मुझे मिले, माता का हौसला, तकलीफों में भी चट्टान की तरह खड़े रहना और पिता की मेहनत मिली, इसमें मेरा कुछ हाथ नहीं, पर उनके द्वारा मेरा अनन्त भला हुआ है। यह बात मुझे सदा उनके आगे नतमस्तक करती है।

13 वर्ष की उमर में मुझे विकासार्थी बनाया गया। विकासार्थी बनने पर कई धर्म सम्बन्धियों ने मेरी पढ़ाई बन्द करने की सलाह दी, परन्तु श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने ज़ोर देकर मेरी पढ़ाई जारी रखी। मुझे पढ़ने का बहुत शौक था, इसमें मेरी माता जी की तड़प शामिल है, वह चाहती थी कि मेरी बेटियां पढ़लिख कर अपने पांव पर खड़ी हों। उसका ही परिणाम है कि हम चारों बहनें M.A. B.Ed. तक शिक्षा पा सकी और छोटी बहन ने तो doctrate की भी डिगरी ले ली। पू० भगवान की शिक्षा को समझने के लिए भी उच्च शिक्षा की बेहद ज़रूरत है।

मुझे इन दिनों में यह अनुभव होता रहा है कि नेचर ने मेरे विकास की राह सदा खोली है, यह मेरी अपनी योग्यता है कि उन विकासकारी हालातों से मैंने कितना लाभ उठाया है, परन्तु मैं जानती हूं कि न चाहकर भी मेरा बेहद भला हुआ है।

उससे आगे मेरी भलाई का और मार्ग खुल गया। मेरी शादी न केवल देव समाजी परिवार में हुई बल्कि ऐसे जन से हुई जिनको न केवल देवात्मा के लिए श्रद्धा ही थी बल्कि उनके मिशन में समर्पित होने की प्रबल इच्छा थी। वह गुरू मिशन में अपना जीवन भेंट कर चुके थे। इस मार्ग की कठिनाईयों का भी मुझे आभास था, परन्तु इतनी जाग्रति आ गई थी कि ऐसे सम्बन्धी के साथ जुड़कर मेरे जीवन का जो भला सम्भव है, वह हो सकता है। गुरू मिशन के लिए काम करने में उनका साथ देने, विघ्नकारी न बनने में मैंने सदा अपना सौभाग्य समझा है। यदि यह सम्बन्ध न बनता तो मैं एक गहरी दुनियादारी में ही फंसकर रह जाती, और कितने दुनियावी दुख मिलते, अपनी हम उमर स्त्रियों को, अपनी कई निकटी सम्बन्धियों को देखकर उसका मैं अन्दाज़ा लगा सकती हूं।

इसमें शक नहीं कि मेरे पति की शानदार खूबियों के साथ उनके भीतर जल्दी क्रोधित होकर फट पड़ने का भाव था, परन्तु वह थोड़े समय के लिए होता था, उसको सहन करने में कठिनाई ज़रूर होती रही, परन्तु जब मैं उनको गुरू के मिशन के लिए अथाह संग्राम करते देखती, घर की ज़िम्मेवारियों को पूरा करने में कोई कसर न छोड़ते हुए देखती, अपने बच्चों के प्रति अपने कर्तव्यों को निष्टा के साथ पूरा करते देखती, समाज से कोई आर्थिक सहायता न लेकर मुझे और मेरे बच्चों को आत्म सम्मान से जीने में उनका हाथ देखती, तो मेरा सम्मान उनके लिए बढ़ जाता। समाज का सारा बोझ उठाते हुए, जिस तरह उन्होंने आर्थिक रूप से हमें आत्म निर्भर रखा, जिस प्रकार अपने बच्चों को उच्च से उच्च शिक्षा देने के लिए उन्होंने संग्राम किया और परिवार को हर प्रकार से आत्म सम्मान के साथ जीने के योग्य बनाया, ऐसे जीवन साथी को पाना मेरा कितना बड़ा सौभाग्य! पू० भगवान की और कृपा हुई, उनके देव प्रभावों ने

उनकी इस कमी को भी रोशन कर दिया और अब बीसियों वर्षो से उनका ऊंचा बोलना, बौख़लाना भी बन्द हो गया। अपने गर्म स्वभाव के बावजूद भी उन्होंने मुझे बहुत सम्मान वा स्नेह दिया है और अब इस आयु में जब मैं घरों में देखती हूं कि बज़ुरग एक दूसरे की नुकताचीनी करते रहते हैं, अन्मेल की हालत में रहते हैं, हम जिस शान्ति से जीवन बसर कर रहे हैं, वह सब गुरू महाराज की कृपा है। उनका सारा समय अपने वा दूसरों के भले में गुज़रता है और मेरी जितनी योग्यता है कुछ न कुछ अपना भला करने के संग्राम में लगी रहती हूं।

किसी मनुष्य के महा सौभाग्य की क्या सीमा हो सकती है कि जिसको ऐसे रहनुमा मिल जाएं, जो उसे सही अर्थो में जीने की कला सिखाएं। अपने सम्बन्धों में कैसे जीना है, अपने उपकारियों के उपकारों को अनुभव करके कैसे उनके लिए अधिक से अधिक सुख वा खुशी पहुंचाने वाले बनना है, उनके प्रति अपनी ग़ल्तियों को अनुभव करके पश्चाताप करना है, यह ऐसी अमुल्य शिक्षा देकर मेरे सौभाग्य को कितना बढ़ा दिया है, यह महा उपकार है। इस शिक्षा के अनुसार जितना चला गया है, या चल रहे हैं, उसकी इन्तहा बरकतें मिली हैं और मिल रहीं हैं। घर की सुख शान्ति सत्गुरू की देन है। इस दुनियां में, हमारे घरों में ही गुरू ने स्वर्ग का अनुभव करा दिया है।

इससे आगे जो जो पापों वा मिथ्याओं से बचने का सौभाग्य मिला है। अपनी होश में अपने घर में 8 पापों को देखा तक नहीं, जिसमें दुनियां तिल तिलकर जल रही है। विज्ञान मूलक नज़रिया बना दिया। हम गांवों में रहने वाले, सारी उमर गुरू साहिब के आगे मत्था टेककर ही धन्य धन्य रहते, चाहे घरों मे कितना भी नर्क होता, मुझे विज्ञान मूलक नज़रिया देकर सब मिथ्या साधनों से बचा दिया। वह सत्य समझा दिए जो बड़े बड़े वैज्ञानिक भी नहीं जानते, ऐसा साहित्य प्रदान किया, ऐसे गूढ़ सत्यों की परीक्षा मैरिट के साथ पास करने का सौभाग्य मिल गया, जो बड़े बड़े विद्वान नहीं कर सकते। उन सत्यों का मान्सिक ज्ञान ही मनुष्य को आम मनुष्य मात्र से ऊपर उठा देता है। बड़ों बड़ों को मिथ्या और पाप में गोते खाते देखते हैं तो अपना सौभाग्य नज़र आता है कि हमारी क्या औकात थी, कि विज्ञान मूलक शिक्षा समझ सकते, जिससे बड़े बड़े विद्वान वंचित हैं। बेशक अपनी योग्यता इतनी नहीं कि उस सौभाग्य को उस सीमा तक सफल कर सकूं, जो गुरू की इच्छा है, परन्तु जितना सफल कर सकी हूं, वह भी मेरा महा सौभाग्य है।

पू० भगवान के दरबार की बरकतों की कोई इन्तहा नहीं उनकी कृपा से दीन दुनियां के सब सुख सुविधाएं प्राप्त हैं। बच्चों पर की उनकी मेहनत निष्फल नहीं गई। वह दिलों जान से प्यार वा इज्ज़त करते हैं, धन्यवाद देते नहीं थकते कि यदि उनको अच्छी शिक्षा प्राप्त न होती, तो वह इतनी तरक्की नहीं कर सकते थे। उसके इवज़ मे वह हर तरह की सुख सुविधाएं देने को तत्पर रहते हैं। हम हर प्रकार की चिन्ता से मुक्त हैं।

पू० भगवान की शरण में आने की और कितनी बरकतें मिली हैं, कितने जनों ने किस किस समय सहायता की है। कैसी कठिनाईयों में एक एक साथी बना है। विरोधी से विरोधी हालातों में सहायकारियों की कितनी सहायता हुई है। उन सब के लिए जितना धन्यवादी हों उतना ही हमारे लिए कम है।

शत: शत: प्रणाम है उस गुरू को, शत: शत: प्रणाम है उन फरिश्ते कर्मचारियों को जिनकी कृपा से हमारे सौभाग्य के द्वार खुले हैं। प्रणाम है उन सहायकारियों को, जिन्होंने बड़ी से बड़ी मुश्किल में सुरक्षा के हालात पैदा किए और आज सुरक्षित होकर गुरू के कारज में कुछ न कुछ कील कांटा बनने के योग्य हुए हैं।

(सुरजीत बराड़)

चण्डीगढ़ में माता पिता दिवस

परम पू० भगवान की अद्वितीय शिक्षा के अनुसार माता-पिता के सम्बन्ध में विशेष साधन की सभा 3154, सैक्टर 21 डी, में हमेशा की तरह रखी गई। यह 23 जनवरी 2011 को ईतवार के दिन 9.30 बजे रखी गई। साथी सेवकों को फोन पर सूचना दी गई। उसके फलस्वरूप दड़वा से मधु सूदन जी, जलधर जी, पंचकूला से श्रीमान सुभाष जी और उनका सारा परिवार श्रीमान जगदीष और उनका सारा परिवार, डा० खेड़ा जी, डा० शशी जी, बीबी किरन जी, श्री चमन जी और उनका परिवार, श्रीमती मोनिका जी और उनका परिवार सभा में शामिल होने के लिए पंहुचे।

सब से पहले श्रीमान जगदीष जी ने "हे सत्य शिव सुन्दर ब्रत धारी" नामक भजन का गान किया। खड़े होकर गुरू महाराज का छवि द्वारा अर्चन, देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई। फिर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भरे दिल से गुरू महाराज के दरबार में सभा की सफलता के लिए सहाय प्रार्थना की। इसके बाद जगदीष जी ने "श्रद्धा भाजन माता पिता जी" नामक भजन का बहुत सुन्दर भावों से गान किया।

इस बार कुछ परिवार अपने बजुर्गों वा उपकारियों के फोटोज़ भी सभा में लेकर आए थे। श्रीमान प्रेमबल जी और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती विद्यावती जी की और श्रीमान धर्म रतन जी और उनकी धर्म पत्नी जी, श्रीमान जगदीष जी के माता पिता जी की फोटोज़ अलग मेज पर सजाई गई।

सभापति जी ने परम पू० भगवान देवात्मा के अद्भुत रूप और शिक्षा का ब्यान करते हुए बताया कि बहुत सारे धर्मों की शिक्षा सम्बन्ध त्यागने की है। उसके उदाहरण दिए गए। गुरू महाराज जी की सम्बन्ध तत्व की शिक्षा को बताया गया कि गुरू का हम पर यह महान उपकार है। इस शिक्षा के बिना मनुष्य जंगली, वहिशी ही रहता है। गुरू महाराज के प्रभाव किस प्रकार इस वहिशीपन को दूर करते हैं, किस प्रकार उनके प्रभावों से नारकी संसार के अन्दर स्वर्ग पैदा होता है, उसका सुन्दर ढंग से ब्यान किया गया।

सभापति जी ने अपने इस सम्बन्ध में परिवर्तन का बहते आंसुओं से ब्यान किया। उसके बाद श्रीमान जगदीष जी ने जारो कतार रोते हुए अपने श्रद्धेय पिता जी के अपनी बिमारी में, फिकर, संग्राम और अपने प्रति अत्याधिक सेवा का ज़ोरदार शब्दों में वर्णन किया। वह बहुत दुख अनुभव कर रहे थे कि उन्होंने उनकी इन सेवाओं के लिए मुंह से धन्यवाद भी नहीं किया। वह जिस प्रकार पिता जी के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता के भावों से भरकर, विनीत भावी हो रहे थे, उनका सारा ब्यान पू० भगवान के अद्वितीय प्रभावों की महिमा को महान करने वाला था और अधिकारी जनों के दिलों को झुकाने वाला था। फिर सुभाष जी ने अपने माता पिता के उपकारों का गहरे भावों से वर्णन किया। बहुत अच्छा वातावरण बना। फिर एक सुन्दर भजन का गान किया गया।

फिर श्रीमान जगदीष जी, शशी जी ने और श्रीमान सुभाष जी ने अपने माता पिता की सुन्दर फोटोज़ का फूलों से अर्चन किया। सरोज जी ने भी फूलों द्वारा माता पिता का अर्चन और प्रणाम किया। फिर जो सन्तान हाज़िर थी उन्होंने अपने अपने माता पिता के गलों में हार डालकर उनके चरणों में प्रणाम किया। सारा दृष्य एक स्वर्ग का दृष्य प्रस्तुत कर रहा था। आत्मा धन्य धन्य अनुभव कर रहे थे और उच्च उच्छवास से भर रहे थे। पू० भगवान की चार बार जय ध्वनि करके गुरू के आगे हृदय झुकाए। फिर खेड़ा साहिब की ओर से गजरेला बांटा गया, इसको गुरू दर का प्रसाद समझ कर ग्रहण किया।

इस अवसर पर 260 रू० गुरू भेंट के तौर पर प्राप्त हुआ। कुछ जन हार अपने अपने साथ घर लेकर गए, ताकि घर में जाकर वह माता पिता का सम्मान प्रदर्शन कर सकें। गुरू की कृपा से यह साधन काफी हितकर सिद्ध हुआ।

(एक सेवक)

"माता पिता सन्तान दिवस"

(खेड़ा साहिब के चण्डीगढ़ कोचिंग सैंटर में)

पिछले कई वर्षो की तरह चण्डीगढ़ कोचिंग सैन्टर की तरफ से एक अनोखा और बहुत ही विशेष उत्सव "माता पिता सन्तान दिवस" 26 जनवरी 2011 को पूरे स्टाफ, विद्यार्थीगण और उनके अभिभावकों की उपस्थिति में "पंजाब कलाभवन" सैक्टर 16 में मनाया गया। आज के इस आधुनिक युग में इस तरह का अनोखा और अद्वितीय समारोह शायद की कहीं और होता हो, जहाँ युवा पीड़ी के बच्चों और माता पिता की समीप आने का मौका मिलता है। इस उत्सव की विशेषता यह थी कि जहाँ बच्चों ने माता पिता को उनके बलिदानों और कर्तव्यपूर्ति के लिए धन्यवाद किया और सही राह पे चलने का वादा किया, वहीं दूसरी तरफ माता पिता को भी अपने कर्तव्यों को और जिम्मेदारी से निभाने की प्रेरणा मिली।

उत्सव की शुरूआत में, चण्डीगढ़ कोचिंग सैन्टर के निर्देशक डा० विनोद खेड़ा जी ने उत्सव में अतिथि "श्रीमति गरिमा सिंह", Additional Commissioner, Income Tax Department, का अभिनन्दन करते हुए उनके प्रेरणादायक जीवन का परिचय करवाया।

उसके पश्चात, श्रीमान बलदेव सिंह जी, सचिव, देव धर्म मिशन ने आज के समय में बच्चों के माता पिता से बिगड़ते सम्बंधों पर अपने विचार प्रगट किए। शुरूआत में उन्होंने बताया कि किस प्रकार हमारी ये दुनियां "अन्धों की दुनिया" बनती जा रही है। हम सब जिस्मानी तौर से अन्धे नहीं हैं, बल्कि मन की आँखों से अन्धे हैं। उन्होंने कहा कि पढ़-लिख कर भी हम अन्धे ही रहते हैं क्यों कि हम दूसरों की खूबियां नहीं देख पाते, उनके हमारे प्रति उपकारों को नहीं देख पाते, दूसरो के दुख, पीड़ा नहीं देख पाते और यहाँ तक कि अपने अन्दर झाँक कर अपनी कमियों को भी नहीं देख पाते, और इसलिए हम सब अन्धें हैं, और जिसने अपने अन्दर का यह अन्धापन देख लिया और उसे मिटा लिया, उसका जीवन सफल है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने आगे बढ़ते हुए कहा कि आज इस "माता-पिता सन्तान दिवस" पर हमने देखना हैं कि हम सन्तान होकर किस तरह माता पिता जी की खूबियों, उनके गूणों, उनके हमारे लिए किए गए उपकारों की, उनके सुन्दर विचारों, उनकी कुर्बानियों, उनके दुखों, कष्टों, निराशाओं को देख नहीं पाते और इन सबके प्रति भी अन्धे बन जाते हैं।

इसके पश्चात उन्होने समाचार पत्रों में प्रकाशित कई ऐसे उदाहरणों की तरफ सब का धयान दिलाया जिससे माता पिता और बच्चों के उलझते रिश्ते उजागर हुए, जैसे कि किस प्रकार आज कल सन्तान ही जमीन-जायदाद के लालच के पीछे अपने माता पिता की कातिल बन जाती है और किस तरह आज कल बड़े बड़े अफसरों जैसे कि डाक्टर, इंजीनियर, I.A.S. Officer, Principal के माता पिता को भी "वृद्ध आश्रमों" में धक्के खाने पड़ रहे हैं। उन्होंने यहां तक भी कहा कि वृद्ध आश्रमों का भारत में होना, भारतीय संस्कृति पर एक तमाचा है।

इसके बाद उन्होंने सबको ये एहसास दिलाया कि माँ बाप की हमारे जीवन में कितनी अहम भूमिका है। उन्होंने कहा कि हर बड़ी से बड़ी कुर्बानी हमारे लिए माता-पिता के सिवा और कोई नहीं दे सकता। माता-पिता वो हैं जो अपनी जान को सस्ती देखते हैं और हमारी जान को मँहगी, जो सन्तान के लिए अपनी जान तक गवां सकते हैं, हमारे सुखों के लिए, खुद दुखों के सागर में डूब सकते हैं, और खुद भूखा रहकर

हमें खिला सकते हैं। ऐसे माता पिता को देखने के लिए हमें अपनी मन की आँखें खोलने की ज़रूरत है।

अन्त में उन्होंने कहा कि हम सब को अपने माता पिता की कुर्बानियों को ना भुलाते हुए अपने माता पिता की सेवा में लग जाना चाहिए, और उनका प्यार और आशीश पा लेना चाहिए क्यों कि अगर माँ बाप का आशीर्वाद हमारे साथ है तो हमें हमेशा सफलता प्राप्त होगी।

और सच में उनके इन शब्दों ने उस दिन हम सबको माता पिता के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने के लिए बहुत प्रेरित किया।

इसके पश्चात, आगे सैन्टर के बच्चों ने माता पिता और सन्तान के इस प्यारे रिश्ते को दर्शाते हुए कई रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिसमें कि कई समूह गान जैसे, "माता पिता का प्यार अनोखा, मिलता नहीं बज़ार में", "माँ प्यारी माँ- - - ", "कैसे माता और पिता के उपकार सुनाऊं मैं", कविताएँ एंव "बच्चो की नादानी, माँ की कुर्बानी" नामक नाटिका भी शामिल थी, जिसे सैन्टर के ही एक अध्यापक "श्री अश्वनी ओहरी" और बच्चों ने मिलकर तैयार किया था। इस नाटक में भी यही दर्शाया गया था कि किस प्रकार बच्चों के जीवन को कामयाब बनाने के लिए माँ बाप हर पल कुर्बानी देते रहते हैं और वही बच्चे कामयाब होने के बाद माँ बाप सहित उनकी कुर्बानियों को भी भुला देते हैं। नाटिका के अन्त में सभी की आँखे नम थीं और हम सब किस प्रकार अपने ही माँ बाप के अपराधी बनते जा रहें है, उनके प्रति अपनी जिम्मदारियों को ना निभा कर, ये एहसास हर मन में था। यहाँ तक की नाटक के उपरांत कई बच्चों ने भी आँखों में आँसू लिए स्टेज पर आकर अपने माता पिता का धन्यवाद किय।

इसके उपरान्त, उत्सव की मुख्य अतिथि श्रीमती, "गरिमा सिंह" जी स्टेज पर आई और उन्होने यह माना कि उन्होनें भी आज तक इतना गहराई में कभी नहीं सोचा था कि उनके माता पिता ने उनके लिए कितना किया है और इस उत्सव में शामिल होने के बाद, अब वो अपने माता पिता की कहीं और ज़्यादा कदर कर पाएंगी।

उन्होने यह भी कहा कि आज के ज़माने में, जहाँ सभी तरफ सफलता पाने की होड़ मची हुई है और ऐसे उत्सव कराने के लिए ना तो किसी के पास समय है ना सोच, वहीं Dr. Khera का इस प्रकार का उत्सव कराना अपने आप में काबिले तारीफ है।

उन्होनें कहा कि माता पिता का बच्चों के साथ जो रिश्ता होता है वो जिन्दगी का सबसे प्यारा और अनोखा रिश्ता है पर साथ ही यह हमारे लिए कई जिम्मेदारियाँ भी लाता है। माता पिता जो भी संस्कार, गुण अपने बच्चों को देते हैं, वहीं संस्कार अगली पीढ़ी में भी जाते हैं। उन्होंने कहा कि माता पिता बच्चों के सबसे पहले आदर्श होते हैं अगर वह ही अपने जीवन में अच्छे गुण नहीं अपनाएगें, अपनी नौकरी को निभाते समय भ्रष्ट होगें तो बच्चे भी तो भ्रष्टाचार ही सीखेंगें। उन्होंने कहा कि बहुत छोटी छोटी बातें होती हैं जैसे अगर हम खुद Traffic Light पर सिगनल तोड़ेंगे, जहाँ मन किया वहाँ कूड़ा कर्कट फेकेंगे, Parks में Property तोड़ेंगे, तो बच्चे भी तो सीखेंगे।

अन्त में उन्होंने सब माता पिता को यह एहसास दिलाया कि उन्हें खुद एक जिम्मेदार नागरिक बनते हुए, अपने बच्चों के लिए एक अच्छा आदर्श प्रस्तुत करना है और उन्हें भी यह सिखाना है कि किस तरह अपनी जिम्मेदारी को खुशी और पूरे सच्चे दिल से निभाते हुए, अपने देश को प्यार से सम्भाल के रखना है। साथ ही साथ सभी विद्यार्थीगण को भी चाहिए कि वह सबसे अच्छे गुण लें और भविष्य में जो भी बनें अपनी जिम्मेदारी को अच्छे से निभा के देश का नाम रोशन करें।

जाते जाते श्रीमती गरिमा सिंह ने कहा कि ये चण्डीगढ़ कोचिंग सैन्टर की उपलब्धि है जो वह हर वर्ष देश के लिए आदर्श डाक्टर एवं इंजीनियर तैयार कर रहे हैं और ऐसा उन्हें करते रहना चाहिए क्योंकि यही इस समय की जरूरत है।

डा० खेड़ा ने कोचिंग सैन्टर की ओर से मुख्य अतिथि महोदया को Momento भेंट किया और उनका तह दिल से धन्यवाद किया कि उन्होंने अपने व्यसत कार्यक्रम में से समय निकाल कर बहुत ही श्रेष्ठ ढंग से मार्ग दर्शन किया है जिससे बच्चे और माता पिता सब ही प्रभावित हुए हैं। ये उत्सव ऐसा था जिसमें विद्यार्थी और अध्यापक ही नहीं विद्यार्थियों के माता पिता भी शामिल हुए। सैन्टर के एक छात्र की माता जी ने भी स्टेज पर आकर अपने विचार प्रगट किए और कहा कि आजकल जो माता पिता अपने बच्चों पर आँख मूंद के विश्वास कर लेते हैं, वह भी सही नहीं हैं। उन्होने कहा कि माता पिता का यह फर्ज़ है कि वह बच्चों के लिए पूरा समय निकालें और उन्हें सही राह पर लेकर जाएँ। अन्त में उन्होने भी कोचिंग सैन्टर की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहां बच्चे सिर्फ अच्छे डाक्टर या ईन्जीनियर बनने की राह पर नहीं बल्कि एक अच्छा इन्सान बनने का प्रेरणा भी पाते हैं।

कार्यक्रम के अन्त में सैन्टर की छात्राओं ने बहुत ही प्यारा समूह गान "श्रद्धा भाजन माता पिता जी" प्रस्तुत किया और यह उत्सव समाप्त हुआ।

इस प्रकार प्रोग्राम के अन्त में हर इन्सान ने कुछ ना कुछ ज़रूर सीखा, फिर चाहे वह विद्यार्थी हो या उनके माता पिता, और हम चाहेंगे कि प्रत्येक वर्ष इस महोत्सव को इसी तरह मनाया जाए और हर दिल को यूँ ही प्रेरणा मिलती रहे।

एक हाजरीन

ग़ज़ल

मिट जायेगा गरूर घमंड़ में, अकड़ने में
देर नहीं लगती बिखरने में, उज़ड़ने में
जिन्दगी कट गई कई पंडित-ज्ञानी की
किताब-ये-दुनिया की दो पन्ने पढ़ने में
कितनी जाने गई, कितना खून बह गया
क्रोध-अहंकार के कई जंग लड़ने में
परेशानी-बेचैनी हर तरह की बढ़ेगी
हासिल कुछ नहीं, लड़ने झगडने में
संभलकर चले तो शायद मिलेगी मंजिल
जोखिम ज्यादा, ख़तरा बहुत है दौड़ने में
ना खेलो दिलों से, जज्बातों से किसी की
सारी उम्र कम पड़ती है, दिलों को जोड़ने में
कौन जाने क्या फायदा है बिगाड़ने में
दंगा-फ़साद करने में, तोड़ने-फोड़ने में

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

शुभ संग्राम

चण्डीगढ़ 26 जनवरी के दिन चण्डीगढ़ में खेडा साहिब के कोचिंग सैन्टर में माता पिता दिवस मनाया गया, सैंकड़ों की हाज़री थी और श्रीमान जी ने उनको एड्रैस किया और जल्दी ही मोगा की ओर रवाना हो गए।

समराला - श्रीमान जी यहां पहुंच कर नायब सिंह जी और उनके परिवार को मिले, उनकी सेहत का पता किया और मोगा की ओर रवाना हो गए।

मोगा -यहां श्रीमान अवतार सिंह जी के पास ठहरे। उनके परिवार को मिले और हितकर बातचीत की, सुबह वहां काम निपटा कर गोनियाना के लिए चल पड़े।

गोनियाना - 27 जनवरी की रात को सभा श्रीमान ज्ञान चन्द जी के घर में की गई। कड़ाके की सर्दी के बावजूद भी 18-20 स्त्री पुरुष सभा में आए। सभा में बताया गया कि गुरू महाराज निराली हस्ती हैं। वह फरमाते हैं कि मनुष्य अन्धेरे का जीवन है। अन्धेरे के कारण वह बहुत हानि उठाता है। इसी कारण वह अपने नीच जीवन को नहीं देख सकता और हानि से नहीं बच सकता। गुरू महाराज अपनी ज्योति द्वारा उसका अन्धेरा दूर करके उसको नीच जीवन दिखाते हैं और उससे बचाते हैं। अपने जीवन की घटनाएं बताकर पू० भगवान के कारज की महिमा को बहुत उत्साह से वर्णन किया। अच्छा प्रभावशाली मण्डल बना।

28 जनवरी 2011 सुबह सभा की गई। इसमें बताया गया कि सच्चा धर्म अपनी हस्ती की रक्षा वा विकास से ही आता है। हस्ती में शरीर, दिमाग वा आत्मा शामिल हैं। उनका उचित विकास करना ही धर्म है। मिथ्या और पाप हस्ती के नाशक हैं। पाप पर हानि और अपनी हानि का नाम है। अधिक से अधिक हानि से बचने और पर के काम आना चाहिए। परहित में अपना हित है। मिथ्या पाप से बचाने वाला यही स्थान है। इस संगत के साथ अधिक से अधिक जुड़े रहने की अवश्यकता है। इस सभा में महिमा सवाई से मुख्तियार सिंह जी भी आकर शामिल हुए।

रात को फिर सभा की गई, इसमें 27-28 जन शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य को अभी तक पशुओं की तरह अपने सम्बन्धों में जीना नहीं आया। मनुष्य के सम्बन्धों मे नर्क को जीवित उदाहरणों द्वारा समझाया गया। ऐसे सम्बन्धों को स्वर्गिए बनाने का काम परम पू० भगवान देवात्मा कर रहे हैं। कैसे पति पत्नी के सम्बन्ध को परस्पर सेवा और सम्मान भरा बनाया है। कैसे नारकी पुत्रों को बदल कर माता पिता के भक्त बच्चे बनाया है। भाई बहनों के सम्बन्ध को किस प्रकार सुन्दर और मीठा बनाया है। और सम्बन्धों में भी जो स्वर्ग आया है, उसका ब्यान किया। हाजरीन बहुत प्रभावित हुई। इस सभा में महिमा सवाई से भी तीन जन आकर शामिल हुए। कल्याण सत्संग पहुंचने की सबको प्ररेणा की गई।

29 जनवरी 2011 सुबह की सभा में बताया गया कि देव समाज सर्वप्रथम मोटे मोटे 8 पापों को छुड़वाती है। फिर बताया जाता है कि नीच गति क्या होती है। नीच गति द्वारा नीच परिवर्तन आकर आत्मा का नाश होता है। गुस्से के बारे में बताया गया कि गुस्से में आकर दूसरा आदमी बुरा ही बुरा दिखाई देता है। अपने सुख पर चोट लगने से हम दूसरों से फटते हैं। देव प्रभावों के अमृत से फटकर मनुष्य अपना सारा जीवन नष्ट कर लेता है। अपने सुख की भयानकता को नहीं देख सकते। गुरू महाराज नीच गतियों को दिखाते भी हैं और उन्हें अधिकारी मनुष्यों से उन्हें छुड़वाते भी हैं। मुख्तियार सिंह जी फिर महिमा सवाई से आकर शामिल हुए। 600 रू० दान प्राप्त हुआ। 2 पत्रिकाओं का चन्दा प्राप्त हुआ। शाम को श्रीमान जी

कल्याण में पहुंच गए।

कल्याण रात 7 बजे एक सभा की गई जिसमें बताया गया कि प्रत्येक मनुष्य अच्छी सेहित, अच्छी विद्या, अच्छा धन, मेल मिलाप वा सम्मान चाहता है, जैसे हर विद्यार्थी पास होने के साथ फस्ट भी आना चाहता है। उपरोक्त बरकतों को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को न नियमों का ज्ञान है और न वह उन नियमों को पूरा करता है। परम पू० भगवान देवात्मा का दर हमें इन बरकतों को प्राप्त करने में नियम पूरे करवाकर, हमारी योग्यता के अनुसार हमें उनका भागी बना देते हैं। ज़रूरत है इस दर के साथ जुड़ने की और अपना भला करने की। इन बरकतों की कई घटनाए बताई गई।

30 जनवरी सुबह 9 बजे - सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य को बर्बाद करने वाले पापों और मिथ्या से परम पू० भगवान देवात्मा बचाते हैं। मिथ्या जो बर्बादी करती है उसकी सच्ची, खौफनाक तस्वीर पेश की गई। पापों की भयानता की कई घटनाएं बताई गई। श्रीमान सुरजन सिंह जी श्रीमान जगदीष जी के परिवर्तन पेश किए गए। पापों से बचकर जे परिवारों को राहत मिलती हैं, जो खुशीयां मिलती हैं, जो शुक्राने के भाव पैदा होते हैं। उसके बड़े प्रभावशाली दृष्य पेश किए गए। फिर हाजरीन को प्रार्थना की गई कि प्रतिदिन गुरू महाराज की छवि को प्रणाम करने और धन्यवाद देने का साधन करें।

सुबह 7 बजे फिर एक सभा की गई। इसमें 25-26 के करीब जन शामिल थे। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि ठीक अध्यापक की पहचान कठिन होती है। अच्छा वकील, अच्छा डाक्टर ढूंडना भी कठिन होता है। गुरू की पहचान और भी कठिन है। सच्चा गुरू मनुष्य को पापों से बचाता है। पू० भगवान ने बड़े बड़े डाकुओं, और उनके सरदारों को बदला है। गन्दा चालचलन रखने वालों को स्त्रियों का संरक्षक बनाया हैं। नम्बरदार सुच्चा सिंह जी के जीवन की अश्चर्यजनक तबदीली का वर्णन किया गया। श्रीमान नेत राम जी के जीवन का परिवर्तन बताया गया। अपने परिवार पर गुरू महाराज के उपकारों का हृदय स्पर्षिय वर्णन किया। सभा में अधिकारी जन गुरु महाराज के चरणों में झुक रहे थे।

31 जनवरी सुबह की सभा यहां आख़री सभा थी। इसमें बताया गया कि मनुष्य जीना चाहता है। मरना नहीं चाहता। प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है। दुख नहीं चाहता। इसकी पूर्ति के लिए एक तो पर हित के भावों को पैदा करने की अवश्यकता है और दूसरा परम पू० भगवान के साथ जोड़ने वाले भावों के उपजने की अवश्यकता है। गुरू महाराज ने यह भजन बनाया:-

"परम हित भाव हृदय उपजाओ, धर्म मार्ग की दिन तब जाओ"। परहित के भावों की व्याख्या की है। अंह भाव जो सब मनुष्यों में है, उसके बारे में बताया गया। हम अंह अनुरागी होकर स्वार्थी बनने के लिए बेबस हैं। स्वार्थ जीवन का नाशक है। स्वार्थ तजकर ही जीवन मिलता है या धर्म आता है। जो स्वार्थ को नहीं तजता, वह नाश होने के लिए है। पर सेवा के भिन्न धर्म नहीं आता, न भली गति या पुण्य का काम या उच्च गति होती है। उच्च गतियों के बिना हम सच्चे सेवक नहीं कहला सकते। सेवकों ने प्रतिदिन कुछ न कुछ परसेवा के लिए प्रतिज्ञाएं की। किसी ने प्रतिदिन 10 रू०, किसी ने 5 रू०, रोज सेवा के निमित्त निकालने की प्रतिज्ञाएं की। इस प्रकार यह सभा हितकर रही।

इसके बाद स्थानिय स्कूल के स्टाफ के साथ मीटिंग की गई और हितकर बातचीत करने का प्रोग्राम बनाया गया।

फिर श्रीमान जी 11.30 बजे वहां से चण्डीगढ़ को रवाना हो गए।

WPP - Regd. Postal No.Pb (0077) 2006 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

देव धर्म का पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका

सम्वत् 2067 - 2068 विक्रमी सन् 2011 ई.

सं.	वार्षिक साधनों के विषय	साधन का विशेष दिन	हिन्दू त्योहर
1	माता - पिता और सन्तान के सम्बन्ध में	22 जनवरी,शनिवार	गणेश चौथ
2	भाई बहनों के सम्बन्ध में	8 फरवरी, मंगलवार	बसन्त पंचमी
3	देव समाज के सम्बन्ध में	26, 27 फरवरी, शनिवार रविवार	
4	पति पत्नी के सम्बन्ध में	19 मार्च, शनिवार	होली
5	उद्भिद जगत के सम्बन्ध में	4 अप्रैल, सोमवार	नव सम्वत्
6	भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में	18 अप्रैल, सोमवार	
7	वंशीय जनों के सम्बन्ध में	16 मई, सोमवार	नृसिंह चतुर्दशी
8	साथी सेवकों के सम्बन्ध में	12 जून, रविवार	निर्जला एकादशी
9	साथी सेवकों के सम्बन्ध में	14, 15 जुलाई, वीरवार शुक्रवार	व्यास पूजा
10	स्वस्तित्व के सम्बन्ध में	12, 13 अगस्त, शुक्रवार, शनिवार	रक्षा बन्धन
11	पशु जगत् के सम्बन्ध में	5 सितम्बर, सोमवार	राधा अष्टमी
12	परलोक के सम्बन्धम में	27 सितम्बर, मंगलवार	अंतिम श्राद्ध
13	स्वजाति के सम्बन्ध में	6 अक्तूबर, वीरवार	दशहरा
14	भौतिक मात्र के सम्बन्ध में	26 अक्तूबर, बुधवार	दीपावली
15	मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में	10 नवम्बर, वीरवार	गंगा स्नान
16	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बनध में	9,10,11,12 दिसम्बर, शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार विशेष दिन 11 दिसम्बर रविवार	

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts